तंदूर

(पूरा नाटक देवेंद्र सिंह की बैठक में घटता है। नाटक शुरू होने पर देवेंद्र सिंह फाइल देख रहा है, टेलीफोन की घंटी बजती है। देवेन्द्र सिंह टेलीफोन उठाता है।)

देवेन्द्र : हैलो, कौन ? महता जी ? हां-हां, मैं देवेन्द्र सिंह ही बोल रहा हूं... नमस्कार, नमस्कार, सुनाओ क्या खबर है, इधर पहला मोर्चा तो मार लिया है, हाकिम पार्टी की नौजवान संस्था का आगामी दो वर्षों के लिए मुझे महासचिव बना दिया गया है... जनाब, मुबारकबाद तो हुई, वो होटल वाले प्रोजेक्ट का काम एकदम शुरू हो जाना चाहिए और वो आपने ही करना है। क्या कहा ? अलॉटमेंट ? अलॉटमेंट तो अब बड़े प्रधान जी के हाथ में है, जनाब उसका आप फिक्र न करो, अगर अलॉटमेंट बड़े प्रधान जी के हाथ में है तो बड़े प्रधान जी अपने हाथ में हैं। जनाब पिछले दिनों बीमार पड़ गए थे तो दीप, मेरी पत्नी ने ही उनकी सेवा की थी। जनाब, सेवा जैसी होती है, खूब मालिश की, बाम लगाया। वो तो ना-नुकर कर रही थी पर मैंने समझाया कि ऊपर चढ़ने के लिए पहली सीढ़ी है, तो वह कुछ-कुछ समझ गई। जनाब, आखिर तो भारतीय नारी है, पति का कहना कैसे टाल सकती है ? ... बस ठीक है, अब आप सारा प्लान बना लो, होटल का नाम होगा, ला तंदूर। और जनाब, वहां खाना भी तंदूरी होगा, तंदूरी नान, तंदूरी चिकन, मतलब कि तंदूरी चूज़े, जनाब, आप खुद समझदार हो, यह सबकुछ तो चलेगा ही... ओ.के., बाय, बाय...

(टेलीफोन रखता है, दीप आती है।)

दीप : क्या बात है, बड़े खुश हो ?

देवेन्द्र : हां खुश हूं, मेरा सारा काम प्लान के मुताबिक चल रहा है। नौजवानों की संस्था का महासचिव बन गया हूं।

दीप : पर इस महासचिव के पद से घर का चूल्हा तो नहीं जलता।

देवेन्द्र : भली औरत, अब चूल्हे-चौके की ज़रूरत ही कहां है। महता जी को अभी फोन किया है कि होटल का काम फौरन चालू करवा दें। परमिट मैं उन्हें लेकर दूंगा।

दीप : होटल खोलने के लिए पैसा कहां से आएगा? पिताजी तो अब एक रुपया देने को भी तैयार नहीं हैं।

देवेन्द्र : पैसे की ज़रूरत नहीं है, पैसा महता जी लगाएंगे, परमिट मैं लेकर दूंगा। आमदनी में 25 प्रतिशत हिस्सा मेरा होगा। बाकी तुझे तेरे पिताजी का पता है, वे पैसा नहीं देंगे।

दीप : हां, होटल के काम के लिए वे पैसा नहीं देंगे। यह काम उन्हें पसंद नहीं है, यह वो पहले ही कह चुके हैं।

देवेन्द्र : उन्हें होटल का क्या, मेरा कोई भी काम पसंद नहीं है... असल में मैं ही उन्हें पसंद नहीं हूं और यह बात उन्होंने कभी छिपाई भी नहीं।

दीप : हां, उन्होंने यह बात कभी छिपाई नहीं है। मेरी शादी उन्होंने आपके साथ इसलिए की थी कि आप उनके दोस्त सरदार हरचंद सिंह के पुत्र हो, पर उन्हें नहीं पता था कि हरचंद सिंह का चांद क्या-क्या गुल खिलाएगा। और मेरी बात सुन लो, मुझे आपकी ये सारी कमज़ोर हरकतें पसंद नहीं हैं।

देवेन्द्र : कौन सी कमज़ोर हरकतें?

दीप : आपने कहा था कि आपका वो प्रधान जी बीमार है। डॉक्टरों ने उन्हें घर में आराम की सलाह दी है। उसके घर में परिवार का कोई मेंबर नहीं है, मैं चली गई पर...

देवेन्द्र : पर क्या?

दीप : मर्द मर्द होता है, बेशक बड़ा प्रधान हो, छोटा प्रधान हो, बूढ़ा हो या जवान हो। उसकी नज़रें दूसरे दिन ही बदल गई थीं।

देवेन्द्र : तुम्हें किस तरह पता है?

दीप : कभी कह रहा था यहां दर्द होता है, कभी कहता था, वहां दर्द है। यहां से दबा दे, वहां से दबा दे। यहां बाम लगा दे, वहां बाम लगा दे। आदमी को कुछ तो शर्म आनी चाहिए।

देवेन्द्र : चल छोड़, तूने उसके हाथ-पैर दबा दिए, बाम लगा दी, उसने तेरा उतार तो नहीं लिया कुछ।

दीप : इस उम्र में अब वह कुछ उतारने लायक है कहां?

देवेन्द्र : किसी वक़्त तो 'कंजर' बड़ा खिलाड़ी होता था।

दीप : इसीलिए आपने मुझे वहां भेजा था?

देवेन्द्र : इसे सियासी खेल कहते हैं। मुझे पता था वो तेरा कुछ नहीं उतार लेगा, पर मैं तेरे रास्ते उसका बहुत कुछ उतार लूंगा। यह नौजवानों की संस्था के महासचिव का पद तो तेरी उस सेवा का ही फल है और अभी तो यह पहली किश्त है।

दीप : खैर, मैं आपके कहने पर चली गई कि बुजुर्ग है, अकेला है, मेरे पिता समान है। पर आगे से मैं आपके किसी खेल में शामिल नहीं होऊंगी।

देवेन्द्र : चलो आगे की आगे देखेंगे, अभी तो होटल लातंदूर की बात करें।

दीप : होटल ला तंदूर?

देवेन्द्र : हां, हमारे होटल का नाम होगा ला तंदूर। ला तंदूर! कैसा काव्यात्मक नाम है। विदेशी सैलानी भी इस नाम को पसंद करते हैं और तंदूरी खाने की तो बात ही कुछ और होती है। तंदूर में मुर्गा भूना जा रहा हो तो क्या नज़ारा होता है।

दीप : अच्छा, अब आकर रोटी खा लो, मुर्गों के सपने छोड़ो।

देवेन्द्र : चल खिला दे अपनी दाल-रोटी कुछ दिन और, फिर किस भड़ुवे ने घर की रोटी खानी है। हां, तू रोटी गरम कर, मैं चोपड़ा साहब से मिल आऊं।

(बाहर जाता है।)

दीप : *(अपने आप से)* पहले ही इनके काम खत्म नहीं होते थे अब ऊपर से महासचिव बन गए हैं, पता नहीं क्या-क्या करेंगे?

(बाहर से पिताजी की आवाज़ आती है, दीप उन्हें लेकर आती है।)

दीप : पिताजी, आप?

पिता : *(सिर पर हाथ रखकर प्यार देते हुए)* मैं इधर से निकल रहा था, सोचा मिलता चलूं, तेरे से एक बात भी करनी थी। *(इधर-उधर देखकर)* देवेन्द्र कहां हैं?

दीप : वो तो पिताजी घर नहीं हैं, दोस्त से मिलने गए हैं।

पिता : कब आएगा?

दीप : कहकर तो गए हैं अभी आ जाएंगे, पर पता नहीं कुछ।

पिता : तुझे उसके बारे में कुछ पता भी है? आखिर तू उसकी पत्नी है।

दीप : किसी वक़्त थी, पर अब तो उनके अपने ही रास्ते हैं।

पिता : हां, उसके अपने रास्ते हैं, और वो किन रास्तों पर चल रहा है, इसका मुझे पता है, पर यह नहीं पता था कि पानी सिर के ऊपर से निकल जाएगा।

दीप : पिताजी, बहुत-सी बातें मैं आपसे छिपाती रही, सोचा अगर आपको पता चलेगा तो आपको दुख होगा।

पिता : दुख तो मुझे इस बात का है कि तू मेरे से बातें छिपाती रही। और आज मैं आया हूं तो हर बात पूछकर ही जाऊंगा।

दीप : अगर पूछना ही चाहते हो तो मैं भी कुछ नहीं छिपाऊंगी।

पिता : हां, कुछ मत छिपाना, मुझे एक-एक बात बता कि तुम्हारे संबंध कैसे चल रहे हैं, तुम्हारा घर कैसे चल रहा है?

दीप : शादी के कुछ दिन बाद ही मुझे पता चल गया था कि मेरा पति, आपका दामाद सरदार देवेन्द्र सिंह वो नहीं है जो आपने समझा था।

पिता : वो नहीं? मतलब?

दीप : यह सरदार हरचंद सिंह एंड संस वाली कंपनी, उसका सजा-धजा दफ्तर सब बोगस था। यह हेराफेरी के अड्डे के सिवाय और कुछ नहीं था, यहां लोगों को लूटने की स्कीमें बनती थीं।

पिता : यह हरचंद सिंह मेरा बड़ा पुराना दोस्त था, अंग्रेजों के वक़्त कई दफा जेल गया, पर यह नहीं पता था कि उसकी मौत के बाद उसका पुत्तर हेराफेरी के अड्डे चलाएगा। कितने अफसोस की बात है।

दीप : घर चलाने के लिए जो खर्च होता था उसके लिए पैसा इस घर में नहीं था। आपको इस बात का पता न चले इसलिए मैं गहने बेचकर घर चलाती रही।

पिता : तू अपने गहने बेचती रही? यह जानते हुए भी कि वे गहने तेरे पास तेरी मां की अमानत हैं। तू छोटी थी जब तेरी मां तुझे छोड़ गई थी और ये गहने मेरे सुपुर्द कर गई कि जब मेरी बेटी की शादी हो तो ये गहने उसे दे देना। तू वो गहने बेचती रही और मुझे खबर तक नहीं दी?

दीप : बात गहनों तक नहीं रही, बल्कि बहुत आगे बढ़ गई है।

पिता : बहुत आगे बढ़ गई है?

दीप : पीने की आदत तो इन्हें पहले से थी, पर ज्यों-ज्यों घर में भूख और तंगी बढ़ती गई, इनकी पीने की आदत घटने की बजाय बढ़ती गई। बहुत बार जब ये घर आते तो इन्हें अपने आप की भी होश न होती।

इनके साथ इनके दोस्त भी आते थे। ऊपर–ऊपर से वे मुझे भाभी कहते थे पर देखते मैली नज़रों से थे, मैं मुश्किल से अपने आपको बचाकर रखती थी।

पिता : और तू यह सब कुछ बर्दाश्त करती रही ? शोर क्यों नहीं मचाया ? शिकायत क्यों नहीं की ? मुझे क्यों नहीं बताया ?

दीप : मैं क्या करती ? कह दो कि आत्महत्या कर लेती, पर मैं यह नहीं कर सकी, मैं अपना घर बचाना चाहती थी।

पिता : बस यही तुम हिंदुस्तानी औरतों की कमी है। तुम अपने मर्द के सारे पाप और गुनाह छिपाती रहती हो, यह सोचकर कि इस तरह घर टूटने से बच जाएगा, पर मेरी बेटी, घर इस तरह नहीं बचते।

दीप : अब तो घर में भी अपनी मर्ज़ी से ही आएंगे क्योंकि रोटी तो अब होटल पर ही खाएंगे और वहां अधनंगी लड़कियों के डांस देखेंगे। अब तो यह सबकुछ मंत्रियों, नेताओं, चेयरमैनों के कल्चर का हिस्सा बन गया है, इसे ये सियासी कल्चर कहते हैं।

(देवेन्द्र सिंह दाखिल होता है, वह गुस्ताख़ नज़रों से पिता जी की तरफ देखता है।)

देवेन्द्र : अच्छा, तो बुजुर्गवार अपनी लाडली से मिलने आए हैं।

पिता : हां आया हूं, तुम्हें कोई ऐतराज़ है ?

देवेन्द्र : पर बुजुर्गो, आपकी बेटी अब वो दीप नहीं रही जो किसी फ्रीडम फाइटर की बेटी थी। अब तो यह मेरी पार्टनर है। वज़ीरों के साथ उठना–बैठना है।

पिता : और इसे वज़ीरों से मिलवाया किसने ?

दीप : पिता जी, आप इन्हें मत बुलाओ, इस वक़्त ये होश में नहीं हैं।

पिता : *(दीप की तरफ)* यह पूरी होश में है। बेवजह बेईमानी करते हैं ये लोग *(देवेन्द्र की तरफ)* हां तो बरखुरदार बता, इसे वज़ीरों से मिलवाया किसने ? कौन एम.एल.ए. बनने के सपने देख रहा है ? कौन मंत्री की कुर्सी पर बैठना चाहता है ? बोलता क्यों नहीं ?

देवेन्द्र : क्या बोलूं ? क्या एम.एल.ए. बनना गुनाह है ? वज़ीर बनना पाप है ? सारे लोग ही एम.एल.ए. बनते हैं।

पिता : सारे लोग एम.एल.ए. बनते हैं, सारे वज़ीर बनते हैं, पर तेरी तरह नीच हरकतें करके नहीं बनते, कमीनी हरकतें करके नहीं बनते।

देवेन्द्र : कौन सी नीच हरकतें ? कौन सी कमीनी हरकतें ? बुजुर्गवार ! अब

आप वाला वक़्त नहीं रहा कि खद्दर पहनो, लाठियां खाओ, जेल में चले जाओ और नेता बन जाओ। आज की सियासत में बहुत खेल खेलने पड़ते हैं।

पिता : हां, कई खेल खेलने पड़ते हैं, बीवियों के सौदे करने पड़ते हैं।

देवेन्द्र : बुजुर्गवार, आप अपनी हद से बाहर जा रहे हैं।

पिता : और तू हद के अंदर है? हमने अंग्रेजों की लाठियां इसलिए नहीं झेली थीं कि जब आज़ादी आए तो हर लुच्चा-लफंगा कुर्सी पर बैठ जाए। भगत सिंह, करतार सिंह सराभा ने भरी जवानी में इसलिए फांसी का फंदा नहीं चूमा था कि जब आज़ादी आ जाए तो हर लुच्चा, बदमाश कुर्सी का मालिक बन बैठे।

देवेन्द्र : आप कहना क्या चाहते हो मैं लुच्चा हूं, बदमाश हूं?

पिता : मैं कहना चाहता नहीं हूं, बल्कि कह रहा हूं कि तू लुच्चा है, बदमाश है और जिस संस्था का तू महासचिव बना है वह भी लुच्चों और बदमाशों की संस्था है।

देवेन्द्र : और आपकी यह बेटी?

पिता : लुच्चों और बदमाशों के ज़ुल्म का शिकार।

दीप : पिता जी अब चुप भी करो।

देवेन्द्र : नहीं, ये चुप नहीं होंगे। बल्कि ऊंची आवाज़ में कहेंगे कि उनका दामाद लुच्चा है, बदमाश है, बीवी का सौदा करने वाला दलाल है। बीवी बेशक इनकी बेटी ही क्यों न हो।

पिता : बरखुरदार, बेटी के रिश्ते ने ही मेरी ज़ुबान अब तक बंद रखी है। तू क्या जाने बाप और बेटी का रिश्ता क्या होता है। पर अब मैं चुप नहीं रह सकता। मैं बोलूंगा, मैं अपनी आवाज़ ऊंची करके बोलूंगा।

देवेन्द्र : और हमें यह आवाज़ बंद करनी आती है। यूं ही तो कुर्सी पर बैठने वालों से नाता नहीं जोड़ा हुआ है। उन्हें हमारी ज़रूरत है और हमें उनकी ज़रूरत है।

पिता : हां, उन्हें तेरी ज़रूरत है और तुम्हें उनकी ज़रूरत है, तुम मिलजुल कर लोगों को खूब मूर्ख बना रहे हो, इसका मुझे पता है।

देवेन्द्र : अगर पता है तो गुस्सा थूक दो। दीप, अपने पिता को फ्रिज में से ठंडा पानी पिला। बहुत गरमी में हैं।

पिता : मैं तेरे घर के पानी पर थूकता भी नहीं, बेटी से मिलने आया था, मिल लिया।

देवेन्द्र : अच्छा, तो फिर सत श्री अकाल।

पिता : सत श्री अकाल, मैं तुम्हें खबरदार करता हूं कि अगर तू अपनी हरकतों से बाज नहीं आया तो वह दिन दूर नहीं जब लोग तुम्हें और तुम जैसे दूसरों को गर्दन से पकड़कर नीचे पटक देंगे और पूछेंगे कि मूंग किस भाव बिकती है। और दीप, तूने भी फैसला करना है कि तूने ज़िंदगी के रास्ते पर चलना है या मौत के।

(पिताजी तेज़ी से बाहर जाते हैं।)

दीप : आपको पिताजी से इस तरह नहीं बोलना चाहिए था।

देवेन्द्र : वो मुझे, लुच्चा, लफंगा और बदमाश कहें और मैं उन्हें सिर आंखों पर बिठाऊं?

दीप : उन्होंने कुछ ग़लत तो नहीं कहा।

देवेन्द्र : मैंने भी कुछ ग़लत नहीं किया। और मुझे अब कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई मुझे क्या समझता है। और हां, जल्दी से तैयार हो जा, आज पर्यटन मंत्री के यहां 'एटहोम' रखी है। बड़े-बड़े लोगों ने वहां आना है, मैं यह मौका गंवाना नहीं चाहता। और मेरे साथ तेरा जाना भी ज़रूरी है।

दीप : पर मैंने कहीं नहीं जाना। मैंने यह फैसला कर लिया है कि आपके किसी खेल में शामिल नहीं होऊंगी।

देवेन्द्र : क्या यह तेरा आखिरी फैसला है?

दीप : हां, यह मेरा आखिरी फैसला है।

देवेन्द्र : अगर तेरा यह आखिरी फैसला है तो मुझे उस सेफ की चाबी दे दे।

दीप : सेफ की चाबी?

देवेन्द्र : हां, उसमें मेरे ज़रूरी काग़ज़ हैं।

दीप : हां, बहुत ज़रूरी काग़ज़ हैं कि किस तरह आपने हेराफेरी की है और जो कुछ भी बना है मेहनत से नहीं कमाया है।

देवेन्द्र : अरे भली औरत, लोगों से हेराफेरी करने के लिए भी मेहनत करनी पड़ती है। अब तू ज़्यादा बातें मत बना और मुझे सेफ की चाबी ला दे।

दीप : चाबी तो मैं ला देती हूं पर आपने अखबार में एक खबर पढ़ी है?

देवेन्द्र : कौन सी खबर?

दीप : दिल्ली के एक होटल के तंदूर में एक औरत की लाश जलाने की कोशिश। लाश के टुकड़े कर रखे थे। पुलिस मौके पर पहुंच गई

और लाश को कब्जे में ले लिया गया। लाश की शिनाख्त नहीं हो सकी।

देवेन्द्र : *(लापरवाही से)* यह कोई खास खबर नहीं है, ये सब कुछ तो अब चलता ही रहता है।

दीप : क्या चलता रहता है ?

देवेन्द्र : किसी का मारा जाना, लाश के टुकड़े किया जाना और फिर तंदूर में जलाया जाना। आदमी अनाड़ी थे जो पकड़े गए।

दीप : आप कहना चाहते हो कि ये साधारण बात है ?

देवेन्द्र : अगर साधारण नहीं है तो खास भी नहीं है। होटलों में बड़े-बड़े नेता आते हैं, शराब के दौर चलते हैं, किस्म-किस्म की सियासी सौदेबाजियां होती हैं, सौदेबाजी का भेद खुल न जाए इसलिए किसी आदमी को रास्ते से हटाना भी ज़रूरी हो जाता है, उम्मीद है सब समझ गई होगी और अब बातें मत बना और मुझे चाबी ला दे।

दीप : ला देती हूं, मैंने चाबी रखकर क्या करना है।
(जाती है)

देवेन्द्र : *(दीप के जाने के बाद)* तंदूर कांड की बात करती है। इसे यह नहीं पता कि यह कांड किसी वक़्त इसके साथ भी हो सकता है। किसी वक़्त भी ? आज भी हो सकता है। कह रही थी, उस औरत की शिनाख्त नहीं हो सकी। हमसे पूछे कोई, वह औरत हमसे भूली थी कहीं। साली, ऑस्ट्रेलिया जाना चाहती थी, अब पहुंचा दी ऑस्ट्रेलिया।
(टेलीफोन की घंटी बजती है।)

देवेन्द्र : *(टेलीफोन पर)* हैलो, कौन चोपड़ा जी, वो होटल वाला काम हो गया है। बाकी आपकी मिस वीना की बाबत मैंने सोच लिया है। हां, हां, अगली सीढ़ी चढ़ने के लिए मिस वीना ही हमारी योजना में बिल्कुल फिट बैठती है। इसके लिए दीप का कांटा निकाल दिया जाएगा। चोपड़ा जी, आप फिक्र न करो। यह काम मैंने के.डी. को सौंप दिया है। *(दीप आती है, देवेन्द्र बात को बदलता है।)* हां, हां, मैं अभी पहुंच रहा हूं। चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, अगर ज़रूरत पड़ी तो धरना भी देंगे... मैं पहुंच रहा हूं।
(टेलीफोन रखता है।)

दीप : ये लो चाबियां। शुक्र है कि वो पाप की गांठ अब मुझे पल्लू से बांधकर नहीं रखनी पड़ेगी। भला हुआ मेरा चरखा टूटा, जिंद अजाब

से छूटी।

देवेन्द्र : मैं अब जा रहा हूं, पर तू मेरे वापिस आने तक घर से बाहर मत जाना।

दीप : यह शर्त क्यों?

देवेन्द्र : क्योंकि मैं नया-नया महासचिव बना हूं, मेरे सियासी विरोधी तुम्हें बरगलाकर या कोई बड़ा लालच देकर तुम्हें मेरे विरुद्ध इस्तेमाल कर सकते हैं, मैं सतर्क रहना चाहता हूं।

दीप : सतर्क?

देवेन्द्र : हां, तेरा पिछला रिकॉर्ड बताता है कि तुझे बरगलाया जा सकता है, खरीदा भी जा सकता है।

दीप : और बदले में मैं यह उम्मीद करूंगी कि आप कोई भी डबल गेम नहीं खेलोगे।

देवेन्द्र : डबल गेम?

दीप : हां, आपका रिकॉर्ड भी बताता है आप डबल गेम खेलने के आदी हैं और यह आपकी सियासत का हिस्सा है।

देवेन्द्र : *(बाहर जाने की तैयारी में फाइल उठाता है)* अच्छा, अब तुम भी सियासी बातें करने लगी हो।

(बाहर जाता है, पर उसकी फाइल में से एक काग़ज़ गिर जाता है, जिसका उसे पता नहीं चलता।)

दीप : *(काग़ज़ उठाते हुए)* यह काग़ज़ यहां फेंक गए हैं, अगर गुम हो गया तो मेरे पीछे पड़ जाएंगे। पर यह तो एक पत्र है।

(पत्र को मुंह के आगे कर लेती है, पीछे से आवाज़ आती है।)

पीछे से आवाज़ : सरदारजी, आपका संदेश मिल गया है। आपका काम हो जाएगा। आपके रास्ते का कांटा निकाल दिया जाएगा। काम मुश्किल है। फीस का ख़्याल रखना। पहले से दोगुनी होनी चाहिए। यह काम आज रात ही हो जाएगा, तसल्ली रखो कोई सुराग नहीं रहेगा। आपका, के.डी.।

दीप : के.डी., तो यूं ही नहीं कह रहे थे कि सब चलता है। लाश का टुकड़े किया जाना, लाश का तंदूर में जलाया जाना। पर देवेन्द्र सिंह, मैं यह नहीं होने दूंगी। मेरा कांटा निकालना इतना आसान नहीं है, अब मैं एक पल भी इस घर में नहीं रहूंगी।

(जाने लगती है तो देवेन्द्र वापिस आ जाता है।)

देवेन्द्र : कहां जा रही है ? मैंने तुम्हें कहा था कि घर से बाहर नहीं जाना।

दीप : सोचा तो मैंने भी था, पर...

देवेन्द्र : पर क्या ?

दीप : देवेन्द्र मैं यह तो जानती थी कि तू धोखेबाज है, झूठा है, पर यह नहीं जानती थी कि तू कातिल भी हो सकता है और क़त्ल भी उस बीवी का, जिसने हर मुश्किल में तेरा साथ दिया, अपने गहने बेचकर घर कर खर्च चलाया। तू पीकर आता, रात भर उल्टी करता रहता था, मैं कभी तेरा मुंह साफ करती और कभी कपड़े साफ करती। तू उसका बदला यह चुका रहा कि आज की रात मेरा ही क़त्ल करवाना चाहता है ताकि मेरी आवाज़ को हमेशा के लिए बंद कर दिया जाए।

देवेन्द्र : यह तू क्या ऊटपटांग बक रही है ?

दीप : मैं ऊटपटांग नहीं कह रही बल्कि यह सबकुछ वो लिखित सबूत कह रहा है जो मुझे मिल गया है।

देवेन्द्र : कौन सा लिखित सबूत ?

दीप : वह काग़ज़ जो गलती से तेरी फाइल में से गिर गया था।

(देवेन्द्र फाइल खोलता है।)

दीप : कहां ढूंढ रहा है, वह काग़ज़ तो मेरे पास है, मैं इसे पुलिस के हवाले करूंगी। देवेन्द्र सिंह तेरा खेल अब ख़त्म हो गया है।

देवेन्द्र : यह खेल ख़त्म नहीं हो सकता, पुलिस को पता है मैं कौन हूं, मेरे ऊपर तक संबंध हैं। पुलिस से ऐसे बीसियों केस मैंने खुर्द-बुर्द करवाए हैं, बल्कि अब यह समझ कि तेरा खेल खत्म हो गया है। पुलिस मेरा क्या बिगाड़ सकती है ?

दीप : पुलिस नहीं बिगाड़ सक़ती। पर मैं तेरी धर्मपत्नी तेरा बहुत कुछ बिगाड़ सकती हूं।

देवेन्द्र : देख लेंगे।

(बाहर जाने के लिए मुड़ता है तो आगे से पिता जी आ जाते हैं।)

पिता : अरे तू क्या देखेगा ? अब तो मैं तुझे देखूंगा। अब मैं तुझे देखूंगा *(गर्दन से पकड़ लेता है।)* तुझे कहा था कि अपनी हरकतों से बाज आ जा नहीं तो लोग तुझे गर्दन से पकड़कर नीचे पटक देंगे, और वह दिन आ गया है देवेन्द्र, वह दिन आ गया है। *(उसे गर्दन से पकड़कर ऊपर उठाता है। एक खास मुद्रा में नाटक समाप्त होता है।)*